हड़प्पा सभ्यता की उत्तरजीविता

1. सिन्धु सभ्यता के अध्ययन करने वाले विद्वान अब इसके ह्रास के कारण नहीं खोजते इसका कारण है कि जीन विद्वानों ने ह० सभ्यता का अध्ययन 1960 के दशक तक किया था उनका मत था कि सभ्यता का अन्त आचानक हुआ इन विद्वानों ने अपना कार्य नगरों नगर नियोजन और बड़ी संरचनाओं के अध्ययन पर ही केन्द्रित किया ऐसी समस्याएं, जैसे ह० नगरों के समकालीन गावों से सम्बन्ध और ह० सभ्यता के विभिन्न तत्वों की निरन्तरता अनदेखी कर दी गई इस प्रकार ह० सभ्यता के ह्रास के कारणों के सम्बन्ध में वाद, विवाद अधिक से अधिक मुर्त बनता गया।

2. 1960 के दशक के अंतिम चरण में मलिक और पौसेल जैसे विद्वानों ने अपना ध्यान ह० परम्परा की निरन्तरता के विभिन्न पहलुओं पर केन्द्रीत किया इन अध्ययनों के परिणाम स्वरूप हड़प्पा सभ्यता के ह्रास के कारणों के सम्बन्ध में वाद विवाद से मुकाबला कहीं अधिक उत्तेजक निकला है। यह सत्य है कि ह० ओर्स के अनेक निवासी खाली कर गये थे और नगर चरण समाप्त हो गया था। तथापि यदि हम ह० सभ्यता के सम्पूर्ण भौगोलिक प्रसार के परिप्रेक्ष्य में देखें तो काफी वस्तुएं ऐसी पुरानी शैली में चलती दिखाई देंगी।

3. पुरातात्विक दृष्टि से कुछ परिवर्तन ध्यान देने योग्य हैं कुछ बस्तियां तो खाली कर दी गयी लेकिन अधिकतर बस्तीयों में निवास जारी रहा, तथापि एक रूप लेखन, मुहर, बाट और मिट्टी के बर्तनों की परम्परा समाप्त हो गयी। दूर दराज की बस्तीयों के बीच घनिष्ठ अन्त: क्रिया सुचक वस्तुएं नष्ट हो गयी अन्य शब्दों में नगर केन्द्रीत अर्थ व्यवस्थाओं से सम्बन्ध कार्य कलाप समाप्त हो गये। इस प्रकार जो परिवर्तन हुए वे केवल नगर चरण के समाप्ती के ही सुचक थे छोटे-2 गाँव और कस्बे तब भी बने रहे और इन स्थानों की पुरातात्विक खोजों में ह० सभ्यता के अनेक तत्व मिले हैं

4. सिन्ध में अधिकतर स्थानों में मृदभाण्ड परम्परा में कोई अन्तर दिखाई नहीं पड़ता वस्तुत: गुजरात राजस्थान और हरियाणा क्षेत्र के बाद के चरण में प्रवासी कृषक समुदायों का बहुत बड़ी संख्या में आविर्भाव हुआ। इस प्रकार क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य में नगर चरण के बाद का काल समृद्ध गाँवों का काल था। जिसमें नगर चरण के मुकाबले कहीं अधिक गाँव थे यही कारण है कि विद्वान आज सांस्कृतिक परिवर्तन, क्षेत्रीय विशेषता और बसने और जीविका के क्षेत्र में संशोधन जैसे विषयों पर चर्चा करते है। ~~तथापि कोई भी प्रारम्भिक~~

5. हड़प्पा नगरीय सभ्यता समाप्ती के बाद जो समृद्ध ग्रामीण संस्कृति पनपी उसका विश्लेषण हम इस प्रकार कर सकते है।

A- सिन्ध (1) सिन्ध के आमरी, ~~और~~ चान्हुदड़ो, झुकड़ जैसे इलाके में लोग ऐसे ही रहते रहे जैसे वे पहले रहते थे वे अब भी ईंटो के मकान में रहते थे लेकिन उन लोगों ने सुनियोजित विन्यास का त्याग किया था वे मामूली किस्म के मृदभांड का उपयोग कर रहे थे जिसे (झुकर मृदभांड) कहा जाता था ये पांडु रंग के बर्तन थे जिसमें लाल पट्टी थी और काले रंग की चित्रकारी की गई थी हाल ही के अध्ययनों से पता चला है कि यह मृदभांड प्रौढ़ हड़प्पा मृदभांड से विरासत में प्राप्त किये गये थे अत: इन्हें कोई नई पीढ़ी नहीं मानना चाहिए।

(ii) झुकड़ के कुछ विशिष्ट धातु की वस्तुएँ मिली है जो ईरान के साथ व्यापार सम्बन्धों की सूचक हो सकती है और इससे अधिक इस बात की ओर सम्भावना प्रदर्शित करती है कि ईरानी ~~से~~ अथवा मध्य एशिया प्रभावों वाले प्रवासियों का बड़ी संख्या में आगमन हुआ छेदविवर (लम्बा विवर) कुल्हाड़ियाँ, ताम्बे की पिन जिनके सिरे कुण्डलाकार अथवा अलंकृत थे पत्थर अथवा प्रकाचित वस्तु की गोलाकार मुहरें और कांस्य प्रसाधन जार, इत्यादि सिन्धु के पश्चिम के संस्कृतियों से सम्पर्क के सूचक है

B. भारत-ईरानी सीमान्त क्षेत्र

सिन्धु नदी के पश्चिम के क्षेत्र बलूचिस्तान और भारत ईरानी सीमान्त प्रदेश के भी उन लोगों के रहने के प्रमाण मिले है जो ठप्पेदार ताम्र मुद्रा और ताम्र दण्ड विवर कुल्हाड़ीयां इस्तेमाल करते थे यहाँ से भी ईरान के सम्पर्क की सूचना मिलती है

C. पंजाब हरियाणा और राजस्थान

1. पंजाब हरियाणा और राजस्थान के क्षेत्र में अनेक ऐसी बस्तीयों की सूचना मिली है जहां नगरो के ह्रास के बाद भी लोग उसी पुराने तरिके से रहते आ रहे थे तथापि मृदभांड परम्परा पर ह० सभ्यता का प्रभाव धिरे २ क्षिण हो रहे थे और स्थानीय मृदभांड परम्पराओं ने ह० मृदभांड परम्परा का पुरी तरह स्थान ले लिया इस प्रकार इन क्षेत्रो में प्रादेशिक परम्पराओं के अभ्युदय होने रहने से नगर रूप का ह्रास प्रतिबिम्बीत होता है

2. मिताथल, बारा, रोपड़ और भिसवाल के स्थल सुप्रसिद्ध है बारा और भिसवाल में ईंटो के मकान मिले है तथा हाल ही में कई स्थलों से गेरुआ मृदभांड मिले है।

D) कच्छ और सौराष्ट्र

कच्छ और सौराष्ट्र के नगर चरण का अन्त रंगपुर और सोमनाथ जैसे स्थानों में स्पष्ट रूप से दिखायी देता है नगर चरण में भी उनकी ह० मृदभांड परम्परा के सह अस्तित्व के स्थानीय मृदभांड परम्परा थी यह परम्परा बाद के चरणों में भी बनी रही

Note- प्रवर्ती ह० बस्तीयाँ मालवा और महाराष्ट्र में भी पायी गयी है

निष्कर्ष

नगरों का समाप्ती का यह अर्थ नही था कि ह० समुदाय आस-पास के कृषि समुदाय में विलीन हो गये तथापि राज्य व्यवस्था और अर्थव्यवस्था में केन्द्रीय नियोजक कार्य समाप्त हो गया था जो ह० समुदाय नगर चरण के बाद भी बने रहे उन्होंने अवश्य ही अपनी पुरानी परम्पराओं को बनाये रखा होगा। इस बात की सम्भावना है कि ह० निवासी किसानों ने अपनी पुजा का रूप बनाये रखा होगा

बाद के प्रारम्भिक ऐतिहासिक, काल में ये सम्बन्धीज प्रगट हुआ होगा वैसे उन लोगों ने लिपि का परित्याग कर दिया था।